OM-22 - 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 10/02/2021 5:07 PM Page 6

परमात्म-पहचान के पाँच पैरामीटर

जिस प्रकार सोनार सोने को परखने के लिए उसे पत्थर पर रगड़ता है कि सोना खरा है या नकली है। वैसे ही अगर हमें परमपिता परमात्मा की सत्य पहचान करनी हो तो उसके लिए भी तो एक पैरामीटर होना चाहिए ना! अब वो पैरामीटर क्या हो सकता है, ज़रा ये

हमारे पास ऐसे पाँच पैरामीटर हैं जिनके आधार से परमात्मा की परख की जा सकती है, उसे पहचाना जा सकता है।

'ज्योति-स्वरूप' को पूजने के लिए ही हुई ज्योतिर्लिंग की स्थापना

परमात्मा शिव का स्वरूप - 'ज्योति-स्वरूप'

पहला, जो सर्वधर्म मान्य हो। जैसे एक व्यक्ति को कोई भाई कहता है, कोई मामा कहता है, कोई चाचा और कोई पिताजी कहता है, लेकिन उसका स्वरूप तो एक ही होता है ना, हर बार उसका स्वरूप तो नहीं बदल जाता ना! उसी प्रकार भगवान को चाहे कोई ईश्वर कहता, अल्लाह कहता या ओंकार निराकार कहता हो, लेकिन उसका स्वरूप तो वही होना चाहिए ना! बदलना तो नहीं चाहिए ना! सत्य उसको कहा जाता है जिस स्वरूप को हर धर्म वाले स्वीकार करें।

दूसरा, जो सर्वोच्च हो। जिसके ऊपर कोई न हो। जो सर्व का माता-पिता, बंधु-सखा, गुरू-शिक्षक व रक्षक हो, उसका कोई माता-पिता न हो, उसका कोई गुरू न हो, उसका कोई शिक्षक न हो और उसकी कोई रक्षा करने वाला न हो, उसको कहेंगे परमात्मा।

तीसरा है, जो सर्व से परे हो अर्थात् हम मनुष्यात्माओं की तरह जन्म-मरण के चक्र में न आते हों। परमात्मा को अजन्मा कहा जाता है। अजन्मा के साथ-साथ उसने गीता में यह भी कहा है कि मैं कालों का भी काल अर्थात् महाकाल हूँ। मुझे काल कभी खा नहीं सकता। जिसका जन्म होता है उसे कर्म भी करना पड़ता है और उसको कर्म का फल भी भोगना पड़ता है। जो कर्म और कर्मफल के चक्र में आ जाता है उसे हम परमात्मा नहीं कह सकते, क्योंकि उसने स्वयं कहा है कि मैं अकर्ता हूँ तथा अभोक्ता हूँ और न करता हूँ, न भोगता हूँ।

चौथा, जो परे होते हुए भी सब कुछ जानता हो अर्थात् सर्वज्ञ हो। इसी कारण से परमात्मा को 'त्रिकालदर्शी' कहा जाता है। जिसके पास तीनों कालों व तीनों लोकों का ज्ञान हो, जो त्रिनेत्री हो तथा जो मनुष्यों को भी ज्ञान का दिव्यचक्षु प्रदान करने वाले हों, उसे ही हम परमात्मा कहेंगे।

पाँचवा, जो सर्व गुणों में अनंत हो। जिसकी महिमा के लिए कहा हुआ है, यदि धरती को कागज़ बना दो, सागर को स्याही बना दो, जंगल को कलम बना दो और स्वयं सरस्वती बैठकर परमात्मा की महिमा लिखे तो भी उसकी महिमा लिखी नहीं जा सकती है।

उपरोक्त पाँच कसौटियों पर परखकर देखें, जो खरा उतरता हो, उसे ही भगवान मानें।

कई लोग शिवलिंग की प्रतिमा को ही परमात्मा व भगवान समझ लेते हैं। शिवलिंग, कल्याण करने के लक्षण के रूप में दर्शाया गया है। जैसे कि पुलिंग, स्त्रीलिंग। तो पुलिंग माना पुरुष के लक्षण और स्त्रीलिंग माना स्त्री के लक्षण। उसी तरह परमात्मा सर्व का कल्याण करता है, उसी लक्षण को, उसी कार्य को हमने शिवलिंग कहा, ना कि शिव की प्रतिमा को ही भगवान माना। उसका रूप तो 'ज्योति-स्वरूप' है। ज्योति-स्वरूप को पूजने के लिए ही हमने शिवलिंग की प्रतिमा बनायी।

हो रहा....मनुष्य आत्माओं का दिव्यीकरण

भारत खण्ड सबसे प्राचीन और अविनाशी खण्ड माना जाता है। कहते हैं, परमात्मा ने भारत में आकर नयी दैवी सृष्टि रची। शिव पुराण में अनेक बार ये उल्लेख आया है कि 'भगवान शिव ने पहले प्रजापिता ब्रह्मा को रचा और उनके द्वारा दैवी-सतयुगी सृष्टि रची। नारायण स्वयं विवस्वान थे, सूर्यवंशी थे। हम सभी का वास्तविक धर्म तो आदि सनातन देवी-देवता धर्म ही है।' इस आदि धर्म की स्थापना स्वयं सर्वशक्तिवान परमात्मा शिव निराकार ने संगमयुग पर आकर की। हमारे पूर्वज भी देवी-देवता थे। संगमयुग ब्रह्मा के माध्यम से सहज राजयोग की शिक्षा देते हैं। उसे ही भारत का प्राचीन राजयोग कहते हैं। जिसका सर्वशास्त्रमई शिरोमणि श्रीमद्भगवद् गीता में भी उल्लेख मिलता है। राजयोग का मतलब ही है स्वयं को आत्मा समझना और उसी अस्तित्व को निखारना। आज हम अपने अस्तित्व को ही भूल गये, अपने को देह समझने लग गये। जब खुद को देह समझने लगे तो देहभान में आने से हमारा देवत्व लोप हुआ। ऐसे समय पर परमात्मा का इस धरा पर दिव्य अवतरण होता है और पुनः देह और देह से सम्बंधित मनुष्य

अर्थात् सृष्टि चक्र में चार युग होते हैं, सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग और कलियुग। कलियुग के अंत और सतयुग के पुनः आरंभ की बेला को संगमयुग कहा जाता है। संगम माना मनुष्य-आत्माओं और परमात्मा का मिलन। आत्मा, परमात्मा के सानिध्य में आकर पुनः देव पद प्राप्त करती है। संगमयुग के दौरान परमात्मा शिव निराकार प्रजापिता आत्माओं में व्याप्त विकार, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि से मुक्त कराकर विकारों पर विजय प्राप्त कराते हैं। और मानव में जब देवत्व का प्रागट्य होता है तो वो देवता कहलाता है। परमात्मा द्वारा अज्ञान-अंधकार को ज्ञान के प्रकाश के माध्यम से परिवर्तन करने के कार्य के रूप में ही हम शिवरात्रि का पावन त्योहार मनाते हैं।

परमात्म-मिलन की विधि : सहज राजयोग

अलग-
अ ल ग
पद्धतियां व श्रीमद्भगवद्गीता में योग के इतने सारे प्रकार हैं जिससे मनुष्य हमेशा से ही भ्रमित सा रहा है कि क्या करें... ज्ञान-योग करें, भक्ति-योग करें कि बुद्धि-योग करें! तो परमात्मा ने इस बात को बहुत सहज रीति से हमें समझाया और ये बताया कि मैं इतना सहज हूँ, इतना निर्मानचित्त (ईगोलेस) हूँ कि मुझसे जुड़ने के लिए इतनी कठिन प्रक्रिया अपनाने की आवश्यकता नहीं है। मेरा तो स्वरूप ही ज्योतिर्बिन्दु है। और मुझे याद करने के लिए सबसे पहले अपने भी ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप को पहचानना होता है। क्योंकि आत्मा का मैं पिता हूँ, परम-आत्मा हूँ तो जिस प्रकार से आत्मा का स्वरूप है, उसी प्रकार परम-आत्मा का स्वरूप है। जिस प्रकार शरीर का पिता शरीर स्वरूप है, उसी प्रकार आत्मा का पिता ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप आत्मा ही तो होगा। तो योग आत्मा और परमात्मा के मिलन का ही नाम है। जो कि बहुत सहज है, राजयुक्त है, इन्द्रियों का राजा बनाने वाला है, सारे पाप कर्मों को नष्ट करने वाला है। इसलिए राजयोग ही परमात्मा से योग लगाने का एक सही तरीका है। इसमें हमको अभ्यास करके सबसे पहले स्वयं को शरीर न समझकर आत्मा समझना होता है। तब जाकर उस परमात्मा की नैचुरल याद आती है। ये बात जितनी सहज है, उतनी सहज

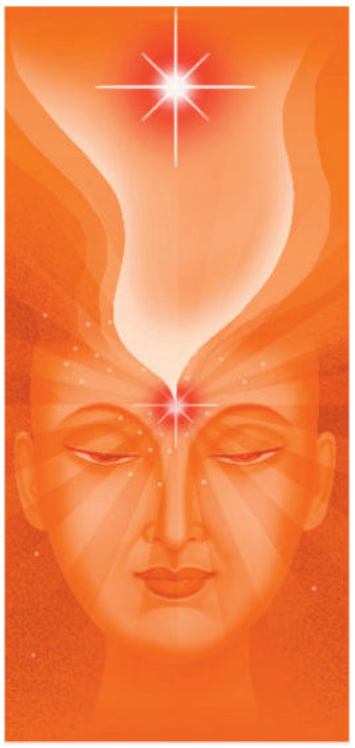

लगती नहीं है, कारण, हम बहुत दिनों से अपने आप को शरीर और शरीर से जुड़ी चीज़ों के साथ ही जोड़ते हैं। उसी से पहचाने जाते हैं। लेकिन जितना देहभान अर्थात् 'मैं-पन, मेरा-पन' है, उससे निकलने के बाद ही हमें परमात्मा मिलेंगे। तो आत्मा और परमात्मा का बुद्धि से, समझ से मिलन का नाम ही राजयोग है। और यही सर्वश्रेष्ठ विधि है परमात्मा से बात करने की।

शिवरात्रि त्योहार... परमात्म अवतरण की यादगार

शिवरात्रि की यथार्थता को समझें तो शिव माना मंगलकारी, कल्याणकारी और रात्रि माना अंधकार, अज्ञान का अंधकार। रात्रि सूचक है, जब चारो ओर अज्ञान-अंधकार में सारी मानवता का भटकाव हो जाता, उसके कारण वे दुःखी और अशांत हो जाते, ऐसे में परमात्मा का दिव्य अवतरण इस धरा पर होता और वे मनुष्यों को इस भटकाव से मुक्त कराकर सुख, शांति की राह पर ले जाते, इसी का यादगार पर्व है शिवरात्रि।

वास्तव में 'रात्रि' शब्द हर चौबीस घंटे में एक बार आने वाला अंधकारमय काल-भाग का नाम नहीं है। बल्कि यह शब्द यहाँ एक अलंकार के रूप में अथवा उपमा के तौर पर प्रयोग किया गया है। जब 'रात्रि' शब्द अलंकार के रूप में प्रयोग होता है, तो यह अन्याय, अत्याचार, लूट-खसूट, मार-धाड़, भ्रष्टाचार व पतन का वाचक होता है। सारे कल्प में जब ऐसा समय आ जाता है जबकि मनुष्य धर्मभ्रष्ट हो जाते हैं, तब संसार में हाहाकार मच जाता है। तब चूंकि सदा जागति ज्योत परमात्मा शिव इस धरा पर मानव मात्र का कल्याण करने के लिए अवतरित होते हैं... इसलिए इस 'रात्रि' को लोग 'शिवरात्रि' के नाम से याद करते हैं और हर वर्ष उस सर्व महान वृत्तांत की स्मृति में त्योहार मनाते हैं। कहावत भी है कि परिस्थितियां पुरुष को जन्म देती हैं, इसलिए उक्ति के अनुसार जब संसार की परिस्थितियां अत्यंत धर्मग्लानि की होती हैं तब पुरुषोत्तम अथवा परमात्मा शिव का अवतरण होता है। इसी उक्ति के अनुरूप ही 'शिवरात्रि' नाम रखा गया है। परमात्मा का कर्त्तव्य भी परम अर्थात् सर्वमहान है। अतः उनका शुभागमन तभी होता है जब सभी तरफ अशुभ व अमंगल हो तथा नर-नारी अत्यंत पीड़ित हों। कलियुग की अंतिम बेला में अवतरण के कारण ही 'शिवरात्रि', ऐसा नाम रखा गया है। कलियुग रूपी रात्रि में ही शिव का इस पृथ्वी पर शिवलोक से आगमन अथवा अवतरण होता है। शिव के 'दुःख-हर्ता, सुख-कर्ता' अथवा 'हर-हर' आदि उपनाम भी तभी सार्थक सिद्ध होते हैं, क्योंकि कलियुग के अंत में जन-जन के दुःख हरकर सतयुग की स्थापना करते हैं। शिव युग-प्रवर्तक हैं। वह युग-पुरुष नहीं, बल्कि कल्प-पुरुष हैं। अज्ञान-निद्रा में सोये नर-नारी को ईश्वरीय ज्ञान देकर उनका कल्याण करने के लिए, उन्हें पाप से मुक्त करने तथा सुखी बनाने के लिए परमपिता परमात्मा शिव कलियुग के अंत में संगमयुग में आते हैं। मनुष्य में व्याप्त काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों से मुक्ति दिलाते हैं और पुनः सतयुगी दैवी-सृष्टि की स्थापना करते हैं।